सल्तनत का इस्लामी स्वरूप → दिल्ली सल्तनत का स्वरूप इस्लामी था। कुरान, हदीस, तथा उलमाओं के अनुसार प्रशासनिक नियम बने। अधिकांश सुल्तानों ने हिन्दुओं के प्रति कठोर नीति का अवलम्बन किया हिन्दुओं के पूजा स्थल, मूर्तियों को नष्ट किया गया इसलिए हिन्दू प्रजा दिल्ली सुल्तानों से नाराज थी।

सल्तनत की सैनिक दुर्बलतायें → दिल्ली के सुल्तानों ने स्थाई सेना पर ध्यान नहीं दिया संकट के समय सामन्तों और जमींदारों के सेना पर निर्भर था समयपर सामन्त धोखा देते थे इस प्रकार विश्वासघात ही दिल्ली सल्तनत के पतन का कारण बना।

उत्तराधिकार नियम का अभाव → दिल्ली सल्तनत में उत्तराधिकार के स्पष्ट और निश्चित नियम नहीं थे उत्तराधिकार नियम तलवारों और षड्यन्त्रों द्वारा होता था जिसमें अपार धन-जन की क्षति उठानी पड़ती थी जिससे सल्तनत कमजोर हुई और विघटन की ओर बढ़ा।

लोकहित के प्रति उदासीनता → दिल्ली के सुल्तान अपने ही समस्या में उलझे रहे लोकहित कल्याण

तैमूर का आक्रमण → तुगलक वंश के अंतिम वर्षों में समरकंद के तैमूर ने आक्रमण किया

22 Monday
माघ सुदी ५-२०७४

जिससे दिल्ली को बड़ा धक्का लगा देश को धन-जन की क्षति हुई ऐसी स्थिति में फायदा उठाकर प्रान्तीय सूबेदार ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया

JAN 18

सैयद वंश के शासकों उत्तराधिकारी → तुगलक के बाद दिल्ली सल्तनत की सत्ता सैयद वंश के हाथ में आई। इस वंश में भी सभी शासक अयोग्य निकले वे लोग शासन सुधार और साम्राज्य विस्तार की ओर ध्यान नहीं दिया सभी जगह अराजकता फैली और देश गरीब होता चला गया।

23 Tuesday
माघ सुदी ६-२०७४

लोदी वंश के शासकों की दुर्बलता →
लोदी वंश के शासक अत्यंत दुर्बल और अनेक गलतियां की वे धर्मान्ध तथा अन्तिम शासक लोदी कुटिल घमंडी था सूबेदारों एवं अमीरों ने काबुल के शासक बाबर को भारत पर आक्रमण के लिए आमंत्रित किया और दिल्ली पतन को नजदीक ला दिया

बाबर का आक्रमण → दिल्ली सल्तनत के अन्तिम और तात्कालिक कारण बाबर का आक्रमण था इस समय दिल्ली सल्तनत अ...

NOTE 9 PRO CAMERA

राजपूतों का विरोध → राजपूत लोग मुसलमानों को अपवित्र कर्ता समझते थे पराजित होने के बाद भी मुसलमानों से विद्रोह करते रहते थे राजपूत कि गिनती वीर जाती मे होती थी लेकिन मुसलमानों ने कट्टरता के कारण इस जाति का सहयोग नहीं ले सका

Friday 19
माघ सुदी २-२०७४

JAN '18

मुहम्मद तुगलक का असफलता → मुहम्मद तुगलक के विभिन्न योजनाओं एवं चारित्रिक अवगुणों के कारण साम्राज्य के विभिन्न भागों में बारम्बार विद्रोह हुए उनके धार्मिक नीति और उलेमाओं के उपेक्षा के कारण सुन्नी मुसलमान नाराज रहते थे उनके साथ उनके सांकेतिक मुद्रा, दोआब कर वृद्धि तथा खुरासन विजय योजना ने सल्तनत की आर्थिक पर बुरा प्रभाव पड़ा।

Saturday 20
माघ सुदी ३-२०७४

फिरोजशाह तुगलक की धर्मान्ध नीति — फिरोजशाह तुगलक ने धर्मान्ध उलेमाओं को प्रसन्न करने के लिए हिन्दुओं के प्रति कटुता की नीति अपनाई और बहुत हिन्दु मन्दिरों एवं मूर्तियों को नष्ट किया इसके साथ उसके पास योग्य सेनानायक तथा उत्तराधिकारी आयोग्य एवं विलासी निकले जिस कारण प्रान्तों में विद्रोह एवं एक के बाद एक उत्तर तथा दक्षिण के राज्य स्वतंत्र होते गये

Sunday 21
माघ सुदी ४-२०७४

के कार्यों की उपेक्षा की अतः जनता में सुल्तानों के प्रति श्रद्धा का अभाव रहा।

यातायात के साधनों का अभाव → सल्तनत काल में सुल्तानों ने उत्तरी तथा दक्षिणी भारत विजय प्राप्त कर सीमा विशाल कर ली थी लेकिन यातायात के साधनों का विकास नहीं होने के कारण सीमा का देख भाल सही से नहीं हो पाया जो पतन का कारण बना।

दरबार में षड्यंत्र → सल्तनत काल में अमीरों की शक्ति काफी बढ़ गई थी अमीरों की सहायता से ही किसी व्यक्ति को सुल्तान बनाया जाता था उस दशा में दरबार अमीरों के षड्यंत्र का अखाड़ा बन गया था।

अमीरों में आपसी भेद भाव → अमीरों में भेदभाव था विदेशी अमीर और भारतीय अमीर आपस में लड़ते रहते थे। विदेशी अमीरों को घृणा की दृष्टि से देखा जाता था।

सामाजिक वर्गों में संघर्ष → समाज विभिन्न वर्गों में विभाजित था। मुसलमानों में शिया और सुन्नी में झगड़ा था। हिन्दुओं में मतान्तर था। इस प्रकार राष्ट्रीय भावना का पूर्ण अभाव था।

E 9 PRO
AMERA

[illegible] [illegible] रखा था। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] और [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] ।

Wednesday 24
माघ सुदी ७-२०७४

JAN 18

Thursday 25
माघ सुदी ८-२०७४